ओमशान्ति। त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब वो लोग त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं, बाप कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति ब्रह्मा भगवानुवाच नहीं कहते। तुम त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच कह सकते हो। शंकर का तो कोई पार्ट ही नहीं। वह लोग तो शिव शंकर कह मिलाय देते हैं। यह तो सिधा है त्रिमूर्ति ब्रह्मा के बदली त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। ब्रह्मा विष्णु और शिव। न कि शंकर। होना चाहिए त्रिमूर्ति शिव। शंकर का कोई पार्ट है नहीं। मनुष्य तो कह देते शंकर आंख खोलते हैं तो विनाश हो जाता है। यह सब बुधि से काम लिया जाता है। तीन का ही मुख्य पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का तो बड़ा पार्ट है 84 जन्मों का। ब्रह्मा के लिए भी कहेंगे 84 जन्म, विष्णु के लिए भी 84 जन्म। विष्णु का और प्रजापिता ब्रह्मा का अर्थ भी समझा है। पार्ट है इन तीनों का। बाकि शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। ब्रह्मा का तो नाम गाया हुआ है आदि देव एडम। प्रजापिता ब्रह्मा का मंदिर भी है। यह है विष्णु का अथवा कृष्ण का अंतिम 84 वां जन्म। जिसका नाम ब्रह्मा रखा है। सिध तो करना है ना। ब्रह्मा और विष्णु। अब ब्रह्मा को तो एडाप्ट करेंगे। यह दोनों बच्चे हैं। वास्तव में बच्चा एक है। हिसाब करेंगे तो ब्रह्मा है शिव बाबा का बच्चा। बाप और दादा। विष्णु का नाम ही नहीं आता। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिव स्थापना कर रहे हैं। विष्णु द्वारा तो स्थापना नहीं कराते। शिव के भी बच्चे हैं। ब्रह्मा के भी बच्चे हैं। विष्णु के बच्चे नहीं कह सकते। न लक्ष्मी नारायण के ही बहुत बच्चे हो सकते हैं। यह है बुधि के लिए भोजन। आपे ही भोजन बनाना चाहिए। रोज2 और थोड़े ही खिलावेंगे। आपे ही बनाना चाहिए। ऐसे2 ख्याल बैठ करनी चाहिए। शंकर का कोई पार्ट नहीं है। सबसे जास्ती पार्ट कहेंगे विष्णु का। 84 जन्मों का विराट रूप भी विष्णु को दिखाते हैं। न कि ब्रह्मा को। विराट रूप विष्णु का ही बनाते हैं। क्योंकि पहले2 शुरू ही लक्ष्मी नारायण से होता है। फिर उतरते2 भिन्न नाम रूप में पार्ट बजाते2 आकर यह प्रजापिता ब्रह्मा का नाम धरते हैं। ब्रह्मा का भी बहुत थोड़ा पार्ट है। इसलिए विराट रूप भी विष्णु का दिखाते। चतुर्भुज भी विष्णु का बनाते हैं। वास्तव में यह अलंकार तो तुम्हारा है। यह भी बड़ी समझने की बात है। कोई मनुष्य समझाय न सके। न किसी शास्त्र से कोई समझ सकते। बाप नई2 किसम से समझाते रहते हैं। बाप कहते हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच राईट है ना। विष्णु ब्रह्मा और शिव। इस में भी प्रजापिता ब्रह्मा ही बच्चा है। विष्णु को बच्चा नहीं कहेंगे। भल कृष्ण को कहते हैं, परन्तु रचना तो ब्रह्मा की होंगी ना। जो फिर भिन्न नाम रूप लेते हैं। मुख्य पार्ट इनका है। ब्रह्मा का पार्ट भी बहुत थोड़ा है इस समय का। विष्णु कितना समय राज्य करते हैं। सारे झाड़ का बीज रूप है शिव बाबा। उनकी रचना को सालिग्राम कहेंगे। ब्रह्मा की रचना को ब्रह्मण ब्राह्मणियां कहेंगे। अब जितनी शिव की रचना है उतनी ब्रह्मा की नहीं। शिव की रचना तो बहुत है। सभी आत्माएं उनकी औलाद हैं। ब्रह्मा के तो सिर्फ तुम ब्राह्मण ही बनते हो। हद में आ गये ना। शिव बाबा के हैं बेहद के बच्चे सभी आत्माएं। बेहद के आत्माओं का कल्याण करते हैं। ब्रह्मा द्वारा सिर्फ स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम ब्राह्मण ही जाय स्वर्गवासी बनेंगे। और तो कोई नहीं बनेंगे ना। निर्वाणवासी अथवा शांति वासी तो सभी बनेंगे। सबसे उंच सर्विस शिव बाबा की होती है। सभी आत्माओं को ले जाते हैं। सभी का पार्ट अलग2 है। शिव बाबा भी कहते हैं मेरा पार्ट अलग है। सभी का हिसाब-किताब चुक्त कराये तुमको पतित से पावन बनाये ले जाता हूं। तुम यहां मेहनत कर रहे हो पावन बनने लिए। दूसरे सब कयामत के समय हिसाब किताब चुक्त कर जावेंगे। फिर मुक्तिधाम में बैठे रहते। सृष्टि का चक्र तो फिरता है ना। तुम बच्चे ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बन फिर देवता बन जाते हो। तुम ब्राह्मण श्रीमत पर हद की सेवा करते हो। भल बेहद की सर्विस भी गिने जाते हैं, परन्तु तुम ब्राह्मण ही सिर्फ मनुष्यों को रास्ता बताते हो। मुक्ति अथवा जीवन मुक्ति पाना है तो ऐसे पाये सकते हो। दोनो चावी हाथ में है। यह भी जानते हो कौन2 मुक्ति में, कौन2 जीवन मुक्ति में जावेंगे। तुम्हारा सारा दिन [illegible] है। जौहरी अनाज आद का धंधा करते हैं तो बुधि में सारा दिन वह ही रहता है ना। तुम्हारा

धंधा ही है रचता और रचना की आद, मध्य अंत को जानना और किसको मुक्ति जीवन मुक्ति का रास्ता बताना। जो इस धर्म के होंगे वह निकल आवेंगे। ऐसे बहुत धर्म के हैं जो बदल नहीं सकते। जैसे अफ्रिका में है, चीनी है वह बदल नहीं सकते हैं। जैसे ऐंगलो क्रिशचनस काले होते हैं। रंग तो नहीं बदलता है। सिर्फ धर्म बदल देंगे। ऐसे नहीं कि फिचरस बदल देते हैं। सिर्फ धर्म को मान लेते हैं। हम बौध को मानते हैं। क्योंकि देव ददी देवता धर्म प्रायः लोप है ना। एक भी ऐसा नहीं जो कहे हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के हैं। देवताओ के चित्र है जो काम में आते हैं। आत्मा तो अविनाशी है। वह कब मरते नहीं। एक शरीर छोड़ फिर दूसरा ले तब पार्ट बजातें हैं। मरते नहीं। उनको मृत्युलोक नहीं कहा जाता है । वह है ही अमर लोक। चोला सिर्फ बदलते हैं। यह बातें बडी सूक्ष्म समझने की है। मुटा नहीं है। जैसे शादी होती है तो किनको रेजकारी किनको मुटा देते हैं। कोई सभ दिखा कर देते हैं। कोई बंद पेटी ही देते है। किसम2 के होते हैं। तुमको तो वर्सा मिलता है मुटा। क्योंकि तुम सब ब्राइडस हो। बाप है ब्राइडस ग्रुम। तुम बच्चों को सिंगार कर विश्व की बादशाही बधी देते हैं। विश्व का मालिक तुम बनते हो ना। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे । मुख्य बात है याद की। ज्ञान तो बहुत सहज है। मल है तो सिर्फ अल्फ को याद करना, परन्तु विचार किया जाता है याद ही झट खिसक जाती है। बहुत कोशिश करके कहते है बाबा याद भुल जाती है। तुम किसको भी समझाओ तो हमेशः याद अक्षर बोलो। योग अक्षर रांग है। टीचर को स्टूडेन्टस रिमेम्बर करते हैं। फादर है सुप्रीम सोल। तुम आत्मा सुप्रीम नहीं हो। तुम हो विषस। पतित। अब बाप को याद करो। युरोपियन आद को भी समझाने का खिर चाहिए। योग अक्षर से मुंझ जाते है। यहां तुमको कहते हैं बाप को याद करो। निष्टा में वा योग में बैठो वह अक्षर निकाल दो। टीचर को बाप को, गुरू को याद किया जाता है। गुरू लोग वेद शास्त्र सुनावेंगे, मंत्र आद देंगे। बाबा का मंत्र एक ही है। फिर बाकी क्या होंगा। मध्याजी भव। माना तुम विष्णु पुरी में चले जावेंगे। सभी तो राजा राणी नहीं बनेंगे। राजा-राणी और प्रजा होती है। तो त्रिमूर्ति है जरूरी। शिव बाबा के बाद है ब्रहमा जो फिर मनुष्य सृष्टि अर्थात ब्रहमण रचते हैं। ब्राहमणों को बैठ फिर पढ़ाते हैं। यह नई बात है ना। तुम ब्राहमण ब्राहमणियां बहन भाई ठहरे। बुधि भी कहेंगी हम बहन भाई हैं। यह अन्दर में समझना है। किसको पलटू ऐसे ही कहना न है। भगवान से प्रजापिता ब्रहमा द्वारा सृष्टि रची तो बहन भाई हो गये ना। जबकि एक प्रजापिता ब्रहमा के बच्चे हैं। यह समझने की बातें हैं। तुम बच्चों को तो बडी खुशी होनी चाहिये कि हमको पढाते कौन है? शिव बाबा। त्रिमूर्ती शिव। ब्रहमा का भी बहुत थोडा समय पाट है। विष्णु का तो तुम जानते हो कि 8 जन्म तक सूर्यवंशी पाट चलता है। ब्रहमा का तो एक ही जन्म का पार्ट है। विष्णु का बडा पार्ट कहेंगें। ब्रहमा विष्णु और शिव। इसलिय ही कहते है त्रिमूर्ती शिव। फिर मुख्य आता है ब्रहमा और का पुजा। जो ही तुम बच्चो को विष्णु पुरी का मलिक बनाते है। ब्रहमा सें बा हम सो फिर देवता बन ते है। तो यह हो गया अलौकिक फादर। थोडा समय। यह फादर है जिनको तो सभी मानते है। आदी देव। ऐडम और ईवी। इन बिना सृष्टी कैसे रचेंगें। आदी देव और आदी देवी। तो बाबा शंकर का तो नाम ही बिलकुल उडा देते है। ब्रहमा का पार्ट भी सिर्फ संगम का ही समय है। देवताओं का पार्ट तो फिर भी बहुत चलता है। देवतायें भी सिर्फ सत युग मे ही रहते है। त्रेता मे फिर क्षत्री कहा जाता है। यह बडी गुहय बात है। सब तो एक ही समय पर वर्णन नही कर सकते है। यह भी समझाते है कि वो कह देते है त्रिमूर्ती ब्रहमा। शिव को उडा दिया है। हम फिर शंकर को उडा देते है। त्रिमूर्ती शिव कहते है। त्रिमूर्ती ब्रहमा कहते है तो उसमे भी ब्रहमा विष्णु शंकर आते है। हम कहते है त्रिमूर्ती शिव। तो उसमे भी शिव। ब्रहमा और विष्णु बाकी शंकर का तो कोई काम ही नही रहता है। ऐसे नही कि वो जब आंख खोलता है तो विनाश होता है। अब टर्की मे अर्थ कुइक हुई तो सैकडों मनुष्य मरे! तो क्या शंकर ने आंख खोली जो कि विनाश हुआ। यह चित्र आद सब है

भक्ति मार्ग के। प्रजा रचते है तो ब्रहमा दवारा। फिर तुम देवता बनते हो। विनाश के समय नेचरल कलेमिटी भी आते है। विनाश तो होना ही है। कलयुग के बाद फिर सतयुग होगा। इतने 500 करौड मनुष्यों का विनाश होना है। सब कुछ प्रेक्टीकल मे चाहिये होता है नां। सिर्फ आखें ही खोलने से ही थोडेई हो सकता है। जब स्वर्ग स्थापन होता है तो उस समय भी थोडेई कोई ऐसा कुईक आद होता है। तो क्या उस समय भी आखें आधी-2 खोलता है क्या? गाते है नां कि दवारका पानी मे नीचे चली गई। लंका भी नीचे चली गई है। अब बाप बैठ कर समझा देते है। पत्थर बुधी को पारस बुधी बनाते है। शास्त्रो मे तो सभी है भक्ति मार्ग। बाप बैठ समझाते है कि इन भक्ति के शास्त्र आद पढने से मेरे साथ कोई भी नही मिलता है। जन्मजन्मान्तर से यह वेद शास्त्र आद पढते-2 उतरते ही आये हो। पुकारते भी है हे पतित पावन आओ आकर हमको पतित से पावन बनाओं। परन्तु यह नही समझते है कि अभी कलयुग है कलयुग के बाद जरूर फिर सतयुग आवेगा। तुम बच्चो को तो खुशी मे खग्गी मारनी चाहिये अन्दर-2 में। बेरिस्टर आद परिक्षा पास करते है तो अन्दर मे यो ख्याल करते है नां कि यह हम पैसे कमावेंगें। फिर मकान बनावेंगें यह करेंगें। अभी तो तुम सच्ची कमाई कर रहे हो। स्वर्ग मे सब कुछ तुमको नया ही मिलेगा। ख्याल करो कि सोमनाथ का मन्दिर क्या था। एक ही मन्दिर तो नही होगा नां। इस मन्दिर को भी 2500 वर्ष हुआ होगा। पुजा की होगी उसके बाद ही फिर वो लूट कर ले गये होगें। फौरन ही तो नही आये होगें नां। बहुत मन्दिर होगें। पुजा के लिये ही बैठ कर मन्दिर बनाते है। ऐसे कुईक होती है तो क्या शंकर आधी आंख बन्द कर करवाते है क्या। कुछ भी समझते नही है अभी तुम जानते हो कि हम बाप को याद करते-2 गोल्डन ऐज मे चले जावेंगें आत्मा प्योअर बन जावेगी। मेहनत करनी पडती है। मेहनत बिना काम ही नही होता है। गाया भी जाता है नां सैकिंड मे जीवन मुक्ति। परन्तु ऐसे ही थोडेई है कि सैकिंड मे ही मिल जाती है। तुम अभी मेहनत कर रहे हो। मुक्ति धाम मे जाने लिये। बाप की याद मे रहना होता है। योग अथवा नेष्टा अक्षर ही निकाल दो। दिन प्रति दिन बाप तुम बच्चों को रिफाईन बुधी बनाते जा रहे है। बाप कहते है कि तुमको मै बहुत खास-2 बाते समझाता हूँ। आगे थोडेई यह समझाता था कि आत्मा बिन्दी है। कहेंगें बाबा ने पहले यह क्यो नही बताया है। ड्रामा मे ही नही था। पहले ही तुमको सुना दें तो तुम समझ न सकेंगे। धीरे2 समझाते रहते हैं। आजपिर शंकर को उड़ाने समझा रहे हैं। त्रिमूर्ति शिव होना चाहिए। इस में तीन मूर्ति भी है। शिव भी त्रिमूर्ति तो है ना। यह भी है। चैतन भी है। मुख्य तो वह है। रावण के राज्य में सभी देहाभिमानी बन जाते है। सतयुग में होते हैं देहीअभिमानी। अपन को आत्मा जानते हैं। हमारा शरीर वडा हुआ है। अब यह छोड़ कर छोटा लेना है। आत्मा का शरीर छोटा होता है फिर वड़ा होता है। यहां तो कोई की कितनी आयु, कोई की कितनी। कोई का अकाले मृत्यु हो जाता है। कोई2 की 25 वर्ष भी आयु होती है। तो बाप समझाते हैं तुमको खुशी बहुत होनी चाहिए। बाप से वर्सा लेने की खुशी। गन्धर्वी विवाह किया यह कोई की बात नहीं। यह तो कमजोर जो डरते हैं। कुमारी अगर कहे हम पवित्र रहना चाहते है तो कोई मार थोड़े ही सकते। ज्ञान कम है तो डरते हैं। छोटी कुमारी को भी कोई मारे, खुन आद निकले, पुलिस में रिपोट करे तो इसके भी सजा मिल सकते हैं। जनावर को कोई मारते हैं तो इस पर भी केस होते हैं। डंड पड़ता है। तुम बच्चों को भी मार नहीं सकते। कुमार को भी मार नहीं सकते। वह तो अपना कमाय खा सकते हैं ना। पेट तो निकाल सकते हैं। पेट कोई जास्ती नहीं खाता है। एक मनुष्य का पेट 2 रुपया। एक मनुष्य का पेट 200 रुपया। पैसा बहुत है तो हवछ हो जाते हैं। गरीबों को पैसा ही नहीं तो हवछ भी नहीं वह अप नेरोटली में ही खुश रहते है। बच्चों को जास्ती खान पान की हंगामें में भी न जाना है। खाने का शौक नहीं। तुम जानते हो वहां हमको क्या न मिलेगा। वेहद की बादशाही, वेहद का सुख मिलता है। कन्याओं ने कितनी पढ़ाई... कोई पढ़ा न पढ़ते हैं फिर भी स्वर्ग में तो जावेंगे। वहां सब कुछ मिलना है।

वहां कोई बिमारी आद होती नहीं। हेल्थ, वेल्थ, हैपिनेस सब रहता है। बुढ़ापा भी वहां बहुत अच्छा रहता है। कोई प्रकार की तकलिफ नहीं है। योगी पवित्र जीवन है ना। टाइम पर एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। दुख की कोई बात नहीं है। सदैव खुशी रहती है। प्रजा भी ऐसे बनते हैं। परन्तु ऐसे भी नहीं। अच्छा प्रजा तो प्रजा ही सही। फिर तो ऐसे होंगे जैसे यहां की भिल। तुम कहते हो हम तो सूर्यवंशी लक्ष्मी नारायण बनेंगे तो फिर इतना पुरुषार्थ करना चाहिए। माया से हार न खानी चाहिए। यह बाकसिंग है गुप्त। बाप को याद करना है। कोई को हम दुख न देवें। क्रोध न करें। अगर कुछ होता है तो बाप को बताओ। बाप कहेंगे मैं जो डायरेक्शन तुमको देता हूं वह धर्मराज भी तो बनेंगे ना। इन द्वारा बाबा अच्छा ही करेंगे। धर्मराज का भी यहां तक पार्ट है। फिर उनकी भी बादशाही पूरी होती है। फिर सुप्रीम धर्मराज का भी पद नहीं रहता। सब की सजा का मेला मलाखड़ा पूरा हो जाता है। हिसाब किताब चुक्त कर चले जाते हैं। धर्मराज का नाम निशान ही गुम हो जाता। ब्रहमा, विष्णु, शंकर को भी देवता कहते है। लक्ष्मी नारायण को फिर भगवान भगवति कह देते। वह है सूक्ष्म वतन के। यह यहां के। मंदर दोनो के हैं। परन्तु आक्युपेशन का किसको पता नहीं है। यह सब बातें बाप समझाते रहते हैं। फिर कहते हैं बाप को याद करो और दैवी गुण भी धारण करो। पूछते हैं रिश्वत के लिए। आज कल तो रिश्वत बिगर कोई रहते नहीं। गर्वमेन्ट के आफिस भी रिश्वत लेते रहते हैं। गर्वमेन्ट का आफिस पकड़ा गया माना गर्व को पकड़ा। रिश्वत बिगर किसका पेट न भरे। खुद भी कहते हैं करप्शन ऐडलटरेशन बहुत है। सब से बड़ी एडलटरेशन तो यह है। जो अपने को श्री2 108 जगत गुरु कहलाते हैं। तुमको पुवाइन्ट बहुत है समझाने की। पहले तो इन गुरुओं को पकड़ो। जिन्होंने नग सत्या नाश की है। सर्वव्यापी की ज्ञान से भारत की यह दशा हुई है। बाप जब भारत को स्वर्ग बनाते हैं उनको भी गाली देते रहते। उन्हों को तो पकड़ो। भारत का बेड़ा ही गर्क कर दिया है। आगे चल कर भी यह सुनेंगे। सुनाते भी जोर हसेंगे यह पतित दुनिया है ना। पावन बन नहीं सकते। भगवान के लिए कह देते हैं कच्छ मच्छ अवतार। बोलो हम हैं संगमयुगी ब्राहमण। तुम कलियुग में हो। हमारा यह संगमयुगी ही न्यारा है। हम ईश्वरीय सन्तान हैं। उनके साथ आये हैं भारत को स्वर्ग बनाने। हम उनके मददगार हैं। उनके हम बच्चे भी हैं। पोत्रे भी हैं। वह भी आत्मा है हम भी आत्मा हैं। उसने यह शरीर धारण किया है। हम ने यह धारण किया है। तो तुमको कितना नशा, अपार खुशी होनी चाहिए। दुख सुख का पार्ट यहां है। सतयुग में यह बातें होती नहीं। अभी तुम ब्राहमण सब कुछ जानते हो। तुमको कौन पढ़ाते हैं? त्रिमूर्ति शिव। त्रिमूर्ति शंकर नहीं। शंकर को उड़ा देते हैं। कल्याणकारी शिव है। शिव बाबा ही हमको स्वर्गवासी बनाते हैं। तुम यहां आये ही हो स्वर्गवासी बनने। तो जरूर दैवी गुण भी धारण करनी चाहिए। अपने से पूछते रहो हम देवता बनने लायक हैं। पाप कटने में टाइम लगता है। विकार में गिरते हैं तो फिर चढ़ने में बहुत मेहनत लगता है। कितना याद में रहना पड़े। जो इतने पाप कट सकें। ऐसा काम न करना चाहिए। जो सौगुना पाप बन जाये। विकार का नाम भी न रहे। इसलिए बाप समझाते हैं दृष्टि ही खराब होती है। यह भूल जाते हैं कि हम भाई बहन हैं। बहन भाई की खराब दृष्टि हो जाती है तो इसको क्रिमनल कहा जाता है। एक दो को खुन करते हैं। यहां के मनुष्य हैं ही क्रिमनल। एक दो पर काम कटारी चलाते हैं। कितना दुख है। फिर क्रिमनलपना छोड़ पवित्र बनते है। तो वहां कितना सुख है। बाप कहते हैं क्रिमनल पना छोड़ो। समझते भी हैं फिर भी संग में चले जाते है। यहां रहने से संग से छूट जाते हैं। वहां तो वायुमंडल खराब रहता है। माया बड़ी जबरदस्त है। ज्ञान देने वाली भी ब्राहमणी भी संग दोष में आये खतम हो जाती है। माया बड़ी जबरदस्त है। बच्चे समझते हैं बाबा ने यह बड़ी बड़ी पुवाइन्ट दी है। ऐसा विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत भी करनी पड़े। बाप कहते हैं सिर्फ एक जन्म पवित्र रहो। अपने को आत्मा समझो। यह आंखें ही धोखा देती है। इस पर अच्छी रीत मेहनत करो। गुल2 हो कर रहो। अच्छा ओम्। अनोखे लाल।